बीकानेरी-नामपद

[बीकानेरी नामपदों का वर्णनात्मक अध्ययन]

(लघु शोध-प्रबन्ध)

राम कृष्ण व्यास
एम ए (हिन्दी, संस्कृत), रिसर्च स्कॉलर

भूमिका लेखक

डॉ० कन्हैयालाल शर्मा
एम ए पी एच डी
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर

प्रकाशक
श्री गणेश-शक्ति प्रकाशन, बीकानेर

बीकानेरी–नामपद

– लेखक –

राम कृष्ण व्यास

मूल्य

रु १२५०

प्रकाशक

श्री गणेश-शक्ति प्रकाशन, बीकानेर

– मुद्रक –

मरुदीप प्रिंटिंग प्रेस, कोट गेट, बीकानेर

BIKANERI NAMPAD

Ram Krishna Vyas

Price Rs 12 50

परमपूज्य स्व० नानाजी प० हरदास जी पुरोहित पुण्य स्मृति ग्रन्थमाला

स्व० प० हरदास जी पुरोहित

भूमिका

निरुक्तकार के अनुसार पद के नाम आख्यात, उपसग और निपात चार भेद होते हैं[1] और पाणिनि सुबन्ता और तिङन्ता को पद की सना देते हैं।[2] यास्क के आख्यात तो पाणिनि के तिङन्त या क्रियापद हैं, पर क्या यास्क के शेष तीन पद नाम उपसग और निपात पाणिनि के "सुबन्त" हैं॥? सामान्य रूप से सुबन्त के अन्तगत नामो-सना सवनाम एव विशेषण पर विचार होता है और 'अव्यय' शीषक के अन्तगत अनेक व्याकरण-पुस्तकें उपसग एव निपात पर विचार करती हैं। इस प्रकार प्रयोगत केवल नाम ही सुबन्त हैं और उपसर्ग और निपात सुबन्त परिधि से बाहर हैं।

पाणिनि ने 'अव्ययादाप्सुप'[3] कहकर अव्यय म सुप विभक्ति का लोप माना है। उनकी दृष्टि से अव्यय भी सुबन्त ही है। उपसग और निपाता को वाक्य म प्रयोगार्ह बनाने के लिए 'सुप् प्रक्रिया से गुजरना पडता है, उसके बिना वे नामा के समान वाक्य मे प्रयुक्त नहीं हो सकते। इस दृष्टि स यास्क के उपसग, निपात और नाम पाणिनि के 'सुबन्त' पद सना के अन्तगत आते हैं। इन सभी मे 'सुप्' विभक्तिया लगती हैं, कही वे लुप्त हा जाती हैं और कही वे प्रकट रहती हैं।

यदि हम पाणिनि के द्वारा दी गई प्रातिपदिक की परिभाषा[4] पर विचार करते हैं तो पाते है कि धातु और प्रत्यय के अतिरिक्त भाषा के समस्त अथवान शब्द प्रातिपदिक हैं। कृदन्त, तद्धित व समस्त शब्दों को भी प्रातिपदिक सना मिली है।[5] इस प्रकार सना सवनाम व विशेषण के अतिरिक्त अव्यय भी प्रातिपदिक है क्योंकि वे अथवान हैं और धातु व प्रत्यय नहीं होते तथा व कृदन्त या तद्धित होते हैं ये प्रातिपदिक शब्द ही वाक्य में प्रयुक्त होने पर विभक्ति प्रत्यय युक्त होने पर 'सुबन्त सना प्राप्त करते हैं। प्रातिपदिकों का अस्तित्व भाषा मे सैद्धान्तिक

१—चत्वारि पदजातानि नामाख्यातेचोपसगनिपाताश्च ॥ निरुक्त १/१/

२—सुप्तिङन्त पदम् ॥ अष्टाध्यायी १/४/१४/

३—पाणिनि ॥ अष्टाध्यायी २/४/८२/

४—अथवदधातुरप्रत्यय प्रातिपदिकम् ॥ अष्टाध्यायी १/२/४५/

५—कृत्तद्धितसमासाश्च ॥ अष्टाध्यायी /१/२/४६/

आधार पर होता है, वास्तव में भाषा व्यवहार में तो पद का ही प्रयोग मिलता है। ये प्रातिपदिक ही प्रकृति प्रकार भी हैं। ये ही विकार युक्त होकर पद स्थान प्राप्त करते हैं।

प्रातिपदिक के अतिरिक्त धातु एवं प्रत्यय प्रकृति श्रेणी में आते हैं।[1] धातु का प्रयोगार्ह रूप तो क्रियापद (तिङन्त) है और प्रातिपदिक का प्रयोगार्ह रूप नामपद (सुबन्त) है। प्रत्यय उन्हें शब्द से रूप या पद बनाते हैं। अतः अर्थ की दृष्टि से भाषा के दो केन्द्र हैं—प्रथम मूल केन्द्र है धातु एवं द्वितीय उप केन्द्र है प्रातिपदिक। ये दोनों ही मध्य तत्त्व प्रत्यय से सुन्दर भाषा का निर्माण करते हैं।

भारतीय आर्य भाषाओं में धातु शब्द का नाभिक होती है। उस पर जब प्रत्यय प्रक्रिया प्रकट होती है तो विभिन्न प्रकार के प्रातिपदिक शब्द बनते हैं। इन व्युत्पादक प्रत्ययों के अतिरिक्त व्याकरणिक प्रत्यय भी होते हैं जो शब्द को वाक्यगत रूप में प्रतिष्ठित करते हैं। सामान्य रूप से यह स्वीकार किया गया है कि ये विभक्ति चिह्न (व्याकरणिक प्रत्यय) नामिक शब्दों के साथ प्रयुक्त होते हैं।[2] जहां इनकी प्रकट प्रक्रिया नहीं दिखाई देती वे नामिक नहीं होते। इसीलिए अव्यय नामपदों की श्रेणी में नहीं आते।

संकुचित अर्थ में केवल संज्ञापद ही नामपदों की श्रेणी में आते हैं क्योंकि किसी के भी नाम को संज्ञा कहते हैं।[3] पाणिनि द्वारा प्रयुक्त सर्वनाम शब्द में सर्वादि शब्द के व्याकरणिक प्रयोगों की एकरूपता के साथ नाम शब्द से उनकी संज्ञा के स्थान पर होने का संकेत था जो उत्तर काल में सर्वनाम के वर्तमान अर्थ में विकसित हो गया। वस्तुतः सर्वनाम नाम न होकर वस्तुओं के निर्देशक होते हैं। विशेषण तो नाम ही होते हैं इन्हें संस्कृत में भी नाम रूप में स्वीकृति मिल गई थी। 'नाम धातुएं' वे धातुएं होती हैं जो संज्ञा सर्वनाम तथा विशेषण आदि से बनती हैं। अतः स्पष्ट है कि नाम का प्रयोग संज्ञा सर्वनाम एवं विशेषण के अर्थ में हो रहा था, पर उनके अतिरिक्त भी नाम शब्द का प्रयोग होता था।

संज्ञा शब्दों विशेषणों सर्वनामों तथा क्रिया विशेषणों से बनी क्रियाएं नामिक क्रियाएं होती हैं।[4] इस प्रकार नाम सीमा में क्रिया विशेषण भी आते हैं।

१—डॉ० भोलानाथ तिवारी भाषा विज्ञान कोश पृष्ठ ६७३
२—डॉ० ज० म० दीमशित्स हिन्दी व्याकरण की रूप रेखा पृ० २६
३—डॉ० भोलानाथ तिवारी भाषा विज्ञान कोश पृ० ६७३
४—डॉ० ज० म० दीमशित्स हिन्दी व्याकरण की रूप रेखा पृ० २५०

आज,कल जबआदि नाम ही हैं पर येहै क्रिया विशेषण।अत नाम अपने व्यापक अथम अव्यया को भी अपनी सीमा म समेट कर चला आ रहा है । अव्यया म विभक्ति के अदर्शन से इनकी एक अलग श्रेणी बन गई है और वयाकरणा ने इन पर पृथक से विचार किया । जब सस्कृत का विद्यार्थी सज्ञा, सवनाम व विशेषणो के रूपो की रटाई कर रहा था तब अव्यय रूप-रचना के अभाव में हाते हुए भी अलग श्रेणी स्थापित कर गए और शेष नामपदों से दूर जा पडे।

प्रस्तुत लघु प्रबन्ध के लेखक श्री रामकृष्ण व्यास बीकानेरी नामपदा मे सना सवनाम व विशेषण पर ही विचार करते हैं अन्यय उनकी अध्ययन सीमा से बाहर के विषय हैं । इतिहास क्रम स तथा विदेशी प्रभाव से नामिकों के रूप म जिन व्याकरणिक शब्द भेदो को स्वीकार किया जा रहा है उन्हीं पर लेखक ने अपने प्रबन्ध मे विचार किया है । प्रबन्ध के दूसरे तीसरे व चौथ अध्याया मे नामपदा पर सनापद सवनाम पद व विशेषण पद पर विचार हुआ है।

आधुनिक अध्येताओ में यह प्रवृत्ति दिखाई देती हैं कि जो - कुछ हमारा प्राचीन ज्ञान है (चाहे वह किसी क्षेत्र का हो) वह हय है, अत अग्राह्य है और पाश्चात्य ज्ञान श्रेष्ठ है, अत ग्राह्य है । पर यह दृष्टि-दोष है । जब ब्लूमफील्ड तक पाणिनि के व्याकरण पर विचार करते हुए लिखते हैं कि 'सस्कृत के अतिरिक्त ससार की अन्य किसी भाषा का इतना पूर्ण वर्णनात्मक अध्ययन नहीं हुआ है'— तथा पाश्चात्य विद्वानो के लिए सस्कृत का ज्ञान अध्ययन का आधार बना हैं। तब भारतीय व्याकरणिक उपलब्धियो की उपेक्षा करना भ्रम को स्वीकार करना है। श्री व्यास ने अपने अध्ययन म भारतीय और पाश्चात्य दोनो शैलियो का अपनाया है । इसलिए दोना की पारिभाषिक शब्दावलिया का उपयोग प्रबन्ध म हुआ है । सनापद अध्याय मे समासा के अध्ययन का आधार रूप-ध्वनिग्रामीय रहा हैं पर परम्परागत अर्थाधारित विश्लेषण भी उपेक्षित नही रहा है । सवनामा क अध्ययन में केन्द्रक रूपा की खोज का प्रयोग सुन्दर है।

प्रत्येक भाषा या बोली मे ऐसे अनेक शब्द हाते हैं जा अपनी भगिनिया स भिन्न होत हैं। नामपदो के निर्माणकारी प्रत्ययो के अध्ययन म ऐस शब्दा के प्रत्यया का विश्लेषण गवेषणा बुद्धि की अपेक्षा रखता है । जो शब्द अन्य भाषाओ

से मिलते जुलते हैं उनका अध्ययन सरलता से अनुकरण के आधार पर हो जाता है। पुस्तक के पाँचवें अध्याय में दोना प्रकार के शब्दो की खोज हुई है। जहाँ लेखक ने केवल बीकानेरी मे प्राप्त शब्दो का विश्लेषण किया है वहा उसका बुद्धि कौशल प्रकट हुआ है।

प्रबन्ध का प्रथम अध्याय बीकानेरी बोली का परिचय ध्वनि स्थापि की दृष्टि से प्रस्तुत करता है। इस अध्याय मे लेखक द्वारा जिन नवीन ध्वनियो का अनुसधान किया गया है वे विद्वानो को अवश्य ही आकर्षित करेंगी, पर उनके लिए जिन लिपि सकेतो का उपयोग किया है वे सर्वथा निजी होने से विद्वानों को सहज ग्राह्य बन सकेंगे यह सदिग्ध है।

मैं श्री व्यास के इस भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन का स्वागत करता हू। उन्होने अपने अनवरत अध्यवसाय और अथक बुद्धि श्रम द्वारा बोली का अध्ययन, वर्गीकरण विश्लेषण, सश्लेषण और तथ्य निरूपण प्रक्रिया द्वारा किया है। अपने अध्ययन से यथा सभव वे पूर्वाग्रह से मुक्त तथा विषय निष्ठ रहे हैं।

मुझे आशा है कि यह प्रबन्ध राजस्थानी की अनेक बोलियो के अध्ययन के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होगा।

डॉ० कन्हैयालाल शर्मा,
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
डूगर महाविद्यालय बीकानेर (राज०)

प्राक्कथन

जब वाक्यान्तगत ध्वनिया के समूह मे व्याकरणिक प्रयोग के अनुसार अर्थबोध की क्षमता होती है तो उसे 'पद' की सज्ञा से अभिहित किया जाता है। सस्कृत वाड्मय मे सुप (सु, औ जस्) एव तिड (तिप तस्, झि) के अभाव मे पदो का निर्माण असभव है। भारोपीय परिवार की आर्य भाषा सस्कृत मे पद रचनात्मक प्रक्रिया सयोगात्मक होने के कारण दुरूह एव जटिल है। मध्यकालीन भारतीय भाषाओ मे सरलीकरण की प्रवृत्ति प्रारभ हो गई थी, जिसको थाती के रूप मे आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओ एव बोलियो ने स्वीकार किया। फलस्वरूप सस्कृत की दुरूह पद रचना प्रक्रिया भी सरल बन गई। आधुनिक भाषाओ व बोलिया मे तो जो भी शब्द वाक्यान्तगत प्रयुक्त होकर अर्थाभिव्यक्ति मे सहायक होते है वे ही 'पद' सज्ञक होते है, चाहे उस शब्द मे / ०/ विभक्ति की ही कल्पना क्या न करना पडे।

सस्कृत वयाकरणो ने 'सुप्तिङन्तम् पदम्' १/८/१४/ सूत्र मे पदो को दो भागो मे विभाजित किया है (अ) नामपद (सुबन्त) एव (आ) क्रियापद (तिङन्त)। नामपद मे अभिप्राय है जिनकी रचना मे प्रातिपदिको के पश्चात् लिंग, वचन एव कारक बोधक विभक्तिया परिलक्षित होती है। नामपद तीन प्रकार के होते हैं– सज्ञापद, सवनामपद तथा विशेषणपद। सज्ञा एव विशेषणवत् प्रयुक्त होने वाले कृदन्त एव तद्धितान्त शब्द भी 'नामपद' की सीमा मे आते है। अस्तु। प्रकृतमनुसराम।

मेरा विवेच्य विषय 'बीकानेरी नामपद' है जिसे मैंने पाच अध्यायो म विश्लेषित किया है।

प्रथम अध्याय का शीर्षक 'विषय प्रवेश' है। इसमे बीकानेर के प्रागैतिहासिक स्वरूप, बीकानेरी शब्द की व्युत्पत्ति बीकानेरी शब्द के विविध अर्थ एव उसका बोली रूप मे प्रयोग, बीकानेरी क्षेत्र व सीमाए बीकानेरी भाषी जनसख्या, मारवाडी एव बीकानेरी मे अन्तर, आदर्श बीकानेरी एव बीकानेरी की भाषा वैज्ञानिक विशेषताए आदि विविध पहलुओ पर विचार किया गया है। शोध-प्रबन्ध का यह अध्याय वस्तुत प्रस्तुत

अध्ययन के लिए भूमि तैयार कर देता है ।

द्वितीय अध्याय मे बीकानेरी सज्ञापदो पर विचार किया गया है । सयोग की दृष्टि से सज्ञापदो को दो भागो मे विभाजित किया गया है – एक स्वतत्र रूपांश युक्त नामवाची-पद (सज्ञापद) एव दो या दो से अधिक स्वतत्र रूपाश युक्त नामवाची पद (समस्तसज्ञा-पद)। एक स्वतत्र रूपाश युक्त पदा मे सज्ञा के विविध तत्त्वो- प्रातिपदिक, लिंग, वचन एव कारको का विवेचन किया गया है। समस्त सज्ञापदो मे, वरणना त्मक आधार पर समस्त सज्ञा पदो के विविध पहलुओ पर विचार किया गया है ।

तृतीय अध्याय मे सावनामिक पदो पर विचार किया गया है । सर्व प्रथम बीकानेरी मे उपलब्ध सवनाम पदो का वर्गीकरण किया गया है । तदनन्तर सावनामिक केन्द्रक रूपो एव उनके मूल व तियक आधार विधायक प्रत्यया का विश्लेषण किया गया है। इसी अध्याय मे साव नामिक समस्त पदा पर भी विचार किया गया है ।

चतुथ अध्याय 'विशेपण पद' है। बीकानेरी विशेपणो को दो वर्गो मे वर्गीकृत किया गया है— प्रथम वे विशेपण पद जो अपने विशेष्य के लिंग, वचन एव कारक मे प्रभावित होते हैं एव द्वितीय व जो विशेष्य के लिंग,वचन एव कारक मे सवथा अप्रभावित रहते हैं। इसी अध्याय म क्रियामूलक विशेपण पदा पर भी विचार किया गया है।

पचम अध्याय मे नामपदा क निर्माणकारी प्रत्यया पर विचार किया गया है। इस अध्याय मे नाम निर्माण की पद्धति पर विचार किया गया है। पद रचनात्मक प्रक्रिया म प्रत्यया का याग अनिवाय रूप से रहता है। पूव, पर एव मध्य प्रत्यय सवनाम पदा के अतिरिक्त धातुआ एव प्रातिपदिको म सलग्न हाकर अभिनव पदा की रचना करत ह। अत इस अध्याय मे इन पर विस्तार मे विचार किया गया है ।

भाषा के इस चरम 'अवयव' 'नामपद' के विश्लेषण की प्रेरणा मुझे अपन श्रद्धेय गुरुवर डॉ० कन्हैयालाल जी से मिली और मैंने बीकानेरी नामपदा क अनुसधान का निश्चय कर लिया। मुझे भान है कि

अद्यावधि इस विषय पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। इतना ही नहीं नामपदों के परिपार्श्व में भी अत्यल्प ही कार्य हुआ है।

साहित्यिक एवं भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से राजस्थानी एक महत्त्वपूर्ण भाषा है। राजस्थानी की बोलियों में मारवाड़ी प्रमुख बोली है एवं बीकानेरी इस मारवाड़ी की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शाखा है, किन्तु यह खेद का विषय है कि इस बोली पर अद्यावधि कोई शोध कार्य नहीं हुआ। यद्यपि पाश्चात्य विद्वान ग्रियर्सन ने इस बोली पर कुछ प्रकाश डालने का प्रयास किया है पर वह नाम मात्र का ही कहा जा सकता है। छुट-पुट पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित एतद् विषयक निबन्ध भी नाम मात्र के हैं। बीकानेर का मूल निवासी एवं बीकानेरी भाषी होने के कारण मुझे यह अभाव खलता था। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध इस अभाव की पूर्ति की दिशा में विनम्र प्रयास है।

यह तो स्पष्ट है कि बोली का ऐसा उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य केवल मुझसे तब तक सम्पन्न नहीं हो सकता था जब तक भाषा एवं साहित्य के समस्त से अधिकारी विद्वान प्रो० कन्हैयालाल जी शर्मा का निदेशन नहीं होता। इतना ही नहीं डॉ० साहब ने समयाभाव में भी सस्नेह भूमिका लिख कर अपार अनुकम्पा की है। इसके लिए गुरुवर को कोटिश नत मस्तक करने के अतिरिक्त कर ही क्या सकता हूँ।

परम पूज्य गुरुवर डॉ० प्रभाकर जी शास्त्री एम ए (हिन्दी-संस्कृत) पी एच डी, डी लिट के परिश्रम का ही यह फल है कि मैं इस उत्तरदायित्व को सफलता पूर्वक निभा सका। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भाषा विज्ञान के विभिन्न विद्वानों, बीकानेरी बोली के मर्मज्ञों – प० नरोत्तमदास जी स्वामी, विद्याधर जी शास्त्री, डॉ० मनोहर शर्मा प्रभृति विद्वानों की प्रेरणा एवं सहपाठीगणों की शुभकामनाएं यदि मेरे साथ न होती तो इस प्रबंध की पूर्ति दुष्कर हो जाती अत मैं बड़ी विनम्रता से उन सब के प्रति आभारी हूँ।

इस सुअवसर पर मैं अपने परम पूज्य पिताजी प० चगसी रामजी एवं माताजी चांदा देवी को कोटिश नत मस्तक करता हूँ जिन्होंने अपार

कठिनाइयों का सामना करते हुए भी मुझे इस प्रबंध लेखन के योग्य बनाया है। काका साहीजी व प० गिरधरलालजी का आशीर्वाद ही इति रूप मे फलित हुआ है। परमपूज्य स्वर्गीय नानाजी प० हरदासजी एव नानीजी, श्रद्धास्पद मामाजी सर्वश्री प० लक्ष्मीनारायणजी, हरनारायणजी, युगल नारायण जी व अजनारायण जी, एव मातृवत लक्ष्मी मासी, चौथा मामी, बाईमा मामी सूरज मासी व परिवार के अन्य सदस्यो का आशीर्वाद ही प्रस्तुत प्रबंध के रूप मे प्रतिफलित हुआ है। अत इन सभी के प्रति मैं श्रद्धावनत हूँ। मेरे भ्रातागण गोपालनारायण एम ए, एलएल बी शास्त्री भगवानदास किराडू एम ए शिवनारायण एम ए, शिवकिसन एम ए मदन गोपाल, जुगलकिशोर, ब्रजनाथ एम ए वेदप्रकाश एम कॉम, श्रीमती पुष्पा शर्मा एम ए एव मित्रगण शिवधनदास, दुर्गादास ने इस कार्य की पूर्ति मे मेरी सहायता की है अत सभी का आभारी हूँ। प्रबंध की समय पर मुद्रण व्यवस्था मे मरुदीप प्रेस के व्यवस्थापक मक्खन भाई साहब व जुगलकिशोर जोशी ने विशेष तत्परता दिखाई है अत इनके प्रति मैं आभारी हू।

सभव है, मेरे सारे प्रयत्नो व अध्यवसायो के उपरात भी विचारो या बोली के विश्लेषण मे कही त्रुटि रह गई हो, किन्तु मुझे पूर्ण विश्वास है कि विद्वज्जन उदारता पूर्वक मेरे इस प्रथम प्रयास की भूलो को क्षमा करेगे एव अपने बहुमूल्य सुझावो द्वारा लाभान्वित करेगे। मैं अपनी सफलता इसी मे समझूगा कि मेरी यह कृति मेरी मात्र न रह कर सर्व सुलभ व सर्व ग्राह्य हो जाय क्योकि— 'आपरितोषाद् विदुषांनसाधुमन्ये प्रयोग विज्ञानम'।

अत म 'करकृतमपराद्ध क्षन्तुमर्हन्ति सत'— इस अभ्यर्थना के साथ अपनी त्रुटियो के प्रति क्षमा याचना करते हुए अपनी श्रम-साधना का यह पुष्प मा भारती को समर्पित करता हूँ।

व्यास – निकेतन
नत्थूसर गेट के भीतर बीकानर।
विजयदशमी, स० २०२८

रामकृष्ण व्यास 'महेन्द्र'
एम ए (हिन्दी सस्कृत)

हिंदी साहित्य के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान

श्रद्धेय गुरुवर डॉ० सरनामसिंह जी शर्मा 'अरुण'

को

सादर समर्पित

नए लिपि एवं संकेत-चिन्ह

यह अर्द्ध संवृत पश्च अनि ह्रस्व स्वर है। हिन्दी की ए, इ एवं कभी-कभी अ ध्वनि का उच्चारण बीकानेरी में इस ध्वनि में होता है यथा — हि० एसा बी० अ़सा हि० कितना - बी० कता हि० रखा - बी० रख्या आदि।

यह अर्द्ध विवृत अग्र ह्रस्व स्वर है। बोली में इस ध्वनि का उच्चारण अंग्रेजी शब्द Men Then Pen आदि के एँ ध्वनि के समान होता है यथा केँस आदि।

यह अर्द्ध विवृत ह्रस्व पश्च स्वर है। इस ध्वनि का उच्चारण बोली में अंग्रेजी शब्द 'on' के ऑ की तरह होता है यथा वाँ, धाँ ओं आदि। हिन्दी की अधिकांश आकारांत ध्वनियों का उच्चारण इसमें होता है।

बीकानेरी में इन दोनों ध्वनियों में क्रमश व + भ् = ॒व एवं द + घ = ॒द का योग है। इन ध्वनियों का उच्चारण न तो 'ब' के समान होता है और न द के समान, यथा ॒वड्दोर में प्रथम ॒व का उच्चारण द्वितीय ब के उच्चारण से भिन्न है।

शेष ध्वनियां अधिकतर हिन्दी के समान ही उच्चरित होती हैं अत यहां प्रस्तुत नहीं की गई है।

ध्वनि प्रक्रियात्मक दृष्टि से सापरिवर्तक का द्योतक।

तथ्य के स्पष्टीकरण के लिए प्रयुक्त संकेत

हलन्त

व्युत्पन्न या सिद्ध रूप का द्योतक

ऐतिहासिक पूर्व रूप से पर रूप का द्योतक

पर प्रत्यय एवं विभक्ति का विभाजक संकेत

धातु संकेत

प्रत्यय के पश्चात् लगने से पूर्व रूप एवं उसके पूर्व में लगाने से पर रूप का द्योतक।

संक्षिप्त-रूप

अप०	अपभ्रंश
आ० भा० आ० भा०	आधुनिक भारतीय आर्य भाषा
आ० ई० ऊ० व्य० वि०	आकारान्त ईकारान्त ऊकारान्त व्यंजनान्त विशेषण
ई०	ईसा
ई० पू० प्र०	ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी
एल० एस० आई०	लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया
गौ० ही० ओ०	गौरीशंकर हीराचन्द ओझा
ति० आ० वि० प्र०	तिर्यक आधार विधायक प्रत्यय
पृ०	पृष्ठ
पं०	पंडित
प्रा०	प्राकृत
पु०	पुल्लिंग
पु० सं०	पुल्लिंग संज्ञा
पप्र०	पर प्रत्यय
बी० रा० इ०	बीकानेर राज्य का इतिहास
भा० वा० सं०	भाव वाचक संज्ञा
मू० आ० वि० प्र०	मूल आधार विधायक प्रत्यय
मू० एवं वि० सं० वि० रूप	मूल एवं विकारी संज्ञा व विशेषण रूप
लि० व० का०	लिंग वचन-कारक
सं० आ० वि० प्र०	सम्बोधन आधार विधायक प्रत्यय
स्त्री० सं०	स्त्री वाचक संज्ञा
सं०	संस्कृत

विषयानुक्रमणिका

३ सर्वनाम-पद

४ विशेषण-पद

५ नामपदो के निर्माणकारी प्रत्यय

बीकानेरी-नामपद

राम कृष्ण व्यास
एम ए (हिन्दी, संस्कृत)

मान्य है। उक्त नदियों के सूखने का मार्ग तो आज भी दृष्टिगत होता है। वर्षा काल में पानी इसी मार्ग से हनुमानगढ़ सूरतगढ़, होता हुआ अनूपगढ़ पहुँच जाता है जिसे आजकल 'नाली' कहते हैं।

उपर्युक्त एवं अन्याय प्रमाणों से स्पष्ट हो जाता है कि समुद्र के पीछे हट जाने या सूख जाने के परिणाम स्वरूप मरु प्रदेश उद्भूत हुआ। बीकानेर प्रदेश में आज भी कहीं कहीं समुद्र के अवशेष के रूप में शंख, सीपी, कोडी गोल पत्थर आदि मिलते हैं, जो बीकानेर का किसी काल विशेष में समुद्राप्लावित होने की सूचना देते हैं एवं जो नदियाँ (सरस्वती, घग्गर आदि) इसकी उत्तरी पूर्वी सीमा पर प्रवाहित होती थी वे भी अब पूर्णतः लुप्त हो गई है।

१.२ बीकानेर प्रदेश का नामकरण

पौराणिक विवरणों से स्पष्ट होता है कि बीकानेर का प्राचीन नाम जांगल" देश था।[1]

१– (क) गौरी शंकर हीराचन्द ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, पहला भाग, पृष्ठ १

(ख) स्कन्द पुराण के प्रभास माहात्म्य में तीर्थाष्टक की गणना है, जिसमें पुष्कर के साथ (कुरु जांगल) का भी पाठ है। (अध्याय ८८, श्लोक २२)

(ग) अवलोकनीय महाभारत

(अ) कच्छा गोपाल कक्षाश्च जांगला कुरु वर्णकाः

(भीष्म पर्व, ९ / ५६)

(ब) तत्रेमे कुरु पांचाला शाल्वामाद्रेय जांगला

(शान्ति पर्व, १० / ११)

(स) पैत्र्यं राज्यं महाराज। कुरवस्ते स जांगला ।

(उद्योग पर्व ५४ / ७)

संस्कृत के शब्द कल्पद्रुम एवं भावप्रकाश में जो व्याख्या मिलती है यह भी इस नाम की पुष्टि करती है क्योंकि आज भी बीकानेर की भौगोलिक परिस्थितियाँ परिभाषानुकूल ही हैं।[1] बीकानेर के नरेशों का अब तक "जंगलधर बादशाह" की उपाधि से अभिहित किया जाना इसका पुष्ट प्रमाण है।[2] वर्तमान बीकानेर राज्य राव 'जोधा' के पुत्र राव बीका ने १२ अप्रैल सन् १४८८ (सं० १५४५) को अपने नाम पर बसाया था।[3] इसलिए इस प्रदेश का नाम बीकानेर पड़ा।

१ २ १ नामकरण विषयक मतमतान्तर

राव बीका ने अपने नाम पर ही इस इस प्रदेश का नाम बीकानेर रखा था, इस विषय पर विद्वान मतैक्य नहीं है। निम्न लिखित मत उल्लेखनीय है

१– राव बीका के ज्येष्ठ पुत्र का नाम नरा था अतः बीकानेर में यह किंवदन्ती प्रचलित है कि पिता पुत्र के नाम पर इस प्रदेश का नाम बीकानेर पड़ा।

२– एक निराधार जनश्रुति यह भी प्रचलित है कि प्राचीन काल में बीकानेर में पानी की कमी के कारण यहा पानी बिकता था इसलिए इस नगर का नाम विक्रयनीय नगर था और विक्रयनीर से बीकानेर बना—

१— स्वल्पोदक तृणोयस्तु प्रवात प्रचुरातप ।
स ज्ञेयो जागलो देशो बहुधान्यादि सयुत ॥

(शब्द कल्पद्रुम पृष्ठ ५२९)

२— गो० ही० ओ० बी० रा० इ०, पृष्ठ २

३— (क) कर्नलटाड राजस्थान का इतिहास पृष्ठ ५१५

(ख) बीकानेर की स्थापना विषयक निम्न लिखित पद्य भी प्रचलित है—
पनरै स पैंतालव सुद वैसाख सुमर ।
थावर बीज थरपियो बीके बीकानेर ॥

विक्रयनीर > बिक्कनेर > बीकानेर

३— कनल टाड न बीकानेर का नाम राव 'बीका" एव "नेरा" जाट दोना व्यक्तियों के नाम के मेल स माना है। अपन मत की पुष्टि के लिए उन्होने लिखा है कि 'बीकानर की राजधानी के निर्माणाथ जो स्थान पसन्द किया गया उसका स्वामी एक जाट था। बीकाजी न जाट स उस स्थान को माग की और आश्वासन दिया कि तुम्हारा नाम जोड कर इस राज्य का नाम रखूगा। उस जाट न बीकाजी का प्रस्ताव सहर्ष स्वीकार करन हुए भूमि दे दी। तत्पश्चात् उम भूमि म राजधानी का निर्माण काय प्रारम्भ हुआ और जिस राज्य की प्रतिष्ठा राव बीका न की उसका नाम बीकानर रखा गया। यह द्रष्टव्य है कि उस जाट का नाम नरा था।[1]

४—डा० गौरी शकर हीराचन्द ओझा क अनुसार टाड का यह अनुमान ठीक नही है। उनके अनुसार राव बीका ने अपने नाम पर ही इस प्रदश का नाम बीकानेर" रखा।[2]

५— भाषा वैज्ञानिक दृष्टि स देखने पर उपयुक्त मत युक्ति सगत प्रतीत नहा होते। वस्तुत 'बीकानर' शब्द दो शब्द बीका + नगर" के मेल स बना है। प्रथम शब्द स्पष्टत राव 'बीका का ही नाम है एव द्वितीय शब्द का विकास क्रम डा श्याम सुदर दास के अनुसार इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

स० नगर > प्रा० णअरो > अप० नयरु > आ० भा० आ० भा० नइर नेर[3]

"नगर" शब्द से 'नर" शब्द का रूपात्मक एव ध्वन्यात्मक विकास इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

सस्कृत के नगर' शब्द स प्राकृत म 'नो ण सवत्र"[4] सूत्र स नकार का परिवतन णकार म हुआ एव कगचजतदपयवा

१— कनल टाड राजस्थान का इतिहास पष्ठ ५१२
२— डॉ० गौ० ही० ओ० बी० रा० इ० (पहला भाग) पृष्ठ ६६
३— डॉ० श्याम सुदर दास भाषा विज्ञान पष्ठ १७२
४— वररुचि प्राकृत प्रकाश २ / ४२

प्रायोनाय '[1] सूत्र से अल्पप्राण कंठ्य स्पर्श व्यंजन ' ग " का लोप हो गया। सावित्री पुनवे सूत्र से " अम बिन्दु म परिवर्तित होने पर प्राकृत म 'णअर" रूप सिद्ध हुआ। अपभ्रंश काल म णकार पुन नकार म परिवर्तित हुआ एवं दो स्वरों के बीच ' य " श्रुति का आगम हुआ। अपभ्रंश उकार बहुला भाषा है अत अ > उ म परिवर्तित हुआ। इस प्रकार अपभ्रंश म ' नयर ' रूप सिद्ध हुआ। आ० भा० आ० भा० म सरलीकरण की प्रवृत्ति के कारण य > इ मे एव पश्चात स्वर लोप की प्रवृत्ति के कारण अन्त्य उ का लोप हो गया एव अ + इ (गुण सन्धि) से 'नर' शब्द व्युत्पन्न हुआ।

इस प्रकार निष्कर्ष रूप म कहा जा सकता है कि बीकानेर" शब्द की व्युत्पत्ति दो शब्दों बीका + नगर ' से हुई है। प्रथम शब्द तो निर्विवाद रूप से राव बीका के नाम से सम्बद्ध है एव द्वितीय शब्द नेर' न राव बीका के ज्येष्ठ पुत्र नरा' म सम्बद्ध है और न ही नेरा जाट से। दोनो मत कल्पना प्रसून ही प्रतीत होते हैं जिसे टाड जसे विद्वान ने बिना किसी गवेषणा बुद्धि के स्वीकार कर लिया। यदि टाड का मत स्वीकार कर भी लिया जाय तो अन्य प्रदेशों (भटनेर जोबनेर चापानेर) जिनके पीछे नेर शब्द जुडा है वहा भी ' नरा जाट का अस्तित्व स्वीकार करना पडेगा जो इतिहास विरुद्ध है। नेर " द्वारा नगरो के नामकरण करने की परम्परा सभवत १५ वी शती से पूर्व प्रचलित थी। इसी पूर्व प्रचलित परम्परा के अनुसार बीका ' ने अपने नाम के पीछे नगर वाचक 'नेर शब्द जोडकर इस प्रदेश का नाम ' बीकानेर " रखा।

इसी बीकानेर प्रदेश मे बोली जाने वाली बोली को डॉ० ग्रियसन[3] डा० सुनीति कुमार चटर्जी[4] डा० भोलानाथ तिवाडी[5] प० नरोत्तमदास

१– वररुचि प्राकृत प्रकाश २ / २

२– वररुचि प्राकृत प्रकाश ५/३०

३– डाक्टर ग्रियसन एल० एस० आई भाग ९, पृष्ठ १३०

४– डाक्टर सुनीति कुमार चटर्जी राजस्थानी भाषा पृष्ठ ६ ७

५– डाक्टर भोलानाथ तिवाडी भाषा विज्ञान कोष पृष्ठ ५१५

स्वामी[1] प्रभृति विद्वानों ने बीकानेरी बोली नाम से अभिहित किया है क्योंकि देश वाचक शब्द के साथ '-ई" प्रत्यय जोड़कर भाषा या बोली वाचक शब्द बताया जाता है यथा— महाराष्ट्र + -ई = महाराष्ट्री, पंजाब + -ई = पंजाबी, बंगाल + -ई = बंगाली। इसी प्रकार बीकानेर + -ई = बीकानेरी बोली वाचक शब्द बना है।

१ ३ "बीकानेरी" शब्द के विभिन्न अर्थ और उसका बोली रूप मे प्रयोग

'बीकानेरी' शब्द के विविध अर्थ हैं। यह शब्द कहीं संज्ञावत् एवं कहीं विशेषणवत् प्रयुक्त होकर वस्तुओं एवं प्राणियों का वाचक बनता है। परन्तु 'बीकानेरी' शब्द से मेरा आशय उस बोली से है जो बीकानेर प्रदेश में बोली जाती है। बोली रूप में इस शब्द का प्रयोग कब हुआ निर्विवाद रूप से नहीं कहा जा सकता। श्री अगरचन्द नाहटा के जैन ग्रन्थालय में तीन रचनाएं उपलब्ध हुई हैं। तीसरी प्रति में दिल्ली, बीकानेर मारवाड़ तथा गुजरात की भाषाओं एवं ढूंढाड़ी, मेवाड़ी एवं दक्षिणी के एक एक सवये हैं।[2] इस प्रति का रचना काल उन्होंने १७ वीं शती बतलाया है। संवत् १८७३ (सन १८१६) में करी मार्श मैन और वार्ड नाम के पाश्चात्य विद्वानों ने भारतीय आर्य भाषाओं के सम्बन्ध में एक रिपोर्ट प्रकाशित की जिसमें भारतवर्ष में बोली जाने वाली ३३ भाषाओं एवं बोलियों के नमूने दिए गये थे। उनमें राजस्थानी की छः बोलियों मारवाड़ी बीकानेरी, उदयपुरी जयपुरी, हाड़ौती और मालवी के नमूनों का समावेश किया गया था।[3] करी मार्श और वार्ड ने १६ वीं शती के प्रथम चरण में बाईबिल के द्वितीय खण्ड (न्यू टेस्टामेंट) का मारवाड़ी उदयपुरी या मेवाड़ी, बीकानेरी जयपुरी, हाड़ौती तथा उज्जैनी या मालवी बोलियों में अनु-

---

१— प० नरोत्तमदास स्वामी राजस्थानी, पृष्ठ ५५
२— अगरचन्द नाहटा राजस्थान भारती भाग ३, अंक ३ ४ पृष्ठ ११३, जुलाई १९५३
३— प० नरोत्तमदास स्वामी राजस्थानी, पृष्ठ ५५

प्रयोग किया ।[1] सर जार्ज ग्रियर्सन ने बीकानेरी को उत्तरी मारवाड़ी का उपनाम स्वीकार किया ।[2]

उपर्युक्त उद्धरणों से स्पष्ट हो जाता है कि 'बीकानेरी' शब्द का बोली रूप में प्रयोग अंग्रेजों की देन है परन्तु निश्चित रूप से यह नहीं कहा जा सकता कि सर्व प्रथम इस शब्द का बोली रूप में प्रयोग कब हुआ। भारतीय आर्य भाषाओं में प्रायः स्थानवाचक शब्द के साथ 'ई' प्रत्यय जोड़कर बोली या भाषा वाचक शब्द बनाया जाता है, यथा मारवाड़+ई= मारवाड़ी, राजस्थान+ई= राजस्थानी आदि। इसी प्रकार से बीकानेर स्थान वाचक शब्द के साथ 'ई' प्रत्यय जुड़कर ही 'बीकानेरी' शब्द बना है और इस शब्द का बोली रूप में प्रयोग भी बीकानेर की स्थापना के पश्चात ही हुआ है।

१.४ बीकानेरी-क्षेत्र

बीकानेरी बोली का क्षेत्र तत्कालीन बीकानेर राज्य का अधिकांश भाग है। तत्कालीन बीकानेर राज्य राजस्थान बनने के पश्चात् तीन जिलों में विभाजित हो गया— बीकानेर, गंगानगर एवं चूरू। इनमें से गंगानगर का अधिकांश भाग बीकानेरी भाषी नहीं है। वर्तमान बीकानेर जिले की चारों तहसीलें—बीकानेर, कोलायत, नोखा व लूणकरणसर बीकानेरी भाषी हैं। चूरू जिले की रतनगढ़, सरदारशहर, सुजानगढ़ व डूंगरगढ़ तो पूर्ण रूप से बीकानेरी भाषी तहसीलें हैं पर राजगढ़ का एक तिहाई पश्चिमी भाग और चूरू का भी लगभग आधा पश्चिमी भाग बीकानेरी भाषी है। इसी जिले की तारानगर तहसील बीकानेरी क्षेत्र में आती है।

१.५ बीकानेरी की सीमाएं

बीकानेरी की उत्तरी सीमा लहन्दा, राठी और पंजाबी बोलियां द्वारा

१– श्री सुनीति कुमार चटर्जी राजस्थानी, पृष्ठ ५६

२– ग्रियसन एल० एस० आई० भाग ६, पृष्ठ १७

बनायी जाती है। इसकी उत्तरी-पूर्वी सीमा पर पजाबी एव बागडी बोलियां रानी जाती है। बागडी एव शेखावाटी इसकी पूर्वी सीमा बनाती है। इसके दक्षिणी पूर्वी म शेखावाटी बोली जाती है। बीकानेरी की दक्षिणी सीमा पर थाली एव आन्य मारवाडी बाली जाती है। थाली बोली ही इसकी दक्षिणी-पश्चिमी सीमा बनाती है। पश्चिमी सीमा पर लहन्दा भाषी व्यक्ति मिलते हैं और उत्तरी-पश्चिमी सीमा लहदा एव राठी बोलियो द्वारा बनाई जाती हैं। बीकानेरी की पश्चिमी सीमा ग्रियसन के अनुसार केवल राजस्थान तक ही सीमित नही है बल्कि पाकिस्तान का बहावलपुर जिले का दक्षिणी-पूर्वी भाग भी बीकानेरी-क्षेत्र के अन्तगत आता है।[१] परन्तु वस्तु स्थिति यह है कि अब बीकानेरी की सीमाए सिमिट कर केवल भारत की सीमाओ से लग गई है। लेखक के लिए उपयु क्त तथ्यो का पुष्ट प्रमाणो के आधार पर प्रमाणित करने की असम्भावना म ग्रियसन द्वारा दिये गये मान चित्र को ही आधार बनाया गया है।

१ ६ बीकानेरी-भाषी जनसख्या

डाक्टर ग्रियसन के अनुसार बीकानेरी भाषियो की जनसख्या ५, ३३, ००० है।[२] सन १९६१ की जनगणना के अनुसार बीकानेरी भाषियो की जनसख्या भारत म ४७ एव राजस्थान मे केवल ३९ है। १९६१ की जनगणना म बीकानेरी भाषियो की जो जनसख्या बताई गई है वह सर्वथा भ्रामक है क्योकि यदि बीकानेरी का स्वतत्र अस्तित्व स्वीकार किया जाता है, और इसे अन्य मारवाडी से भिन्न माना जाता है तो अधिकाश बीका नेर क्षेत्र की जनसख्या की बोली बीकानेरी है एव अकेले बीकानेर नगर मे लगभग २ लाख व्यक्ति निवास करते हैं जिनम एक तिहाई व्यक्ति ठेठ बीकानेरी भाषी हैं। मैंने बीकानेर एव निकटवर्ती ग्रामो म बीकानेरी के भाषा वैज्ञानिक स्वरूप को दृष्टि म रखकर लोगों से प्रश्न किये और उत्तर स्वरूप जो तथ्य

१- ग्रियर्सन एल० एस० आई, भाग ९ पृ०, १२८-२९
२- " " " " " पृ० १३०
३- सेंसस ऑफ इण्डिया सन १९६१

मेरे सामने आये उनसे निश्चित रूपेण कहा जा सकता है कि उसमें बीकानेरी भाषियों की जनसंख्या १९६१ की जनगणना में अखिल भारतवर्ष के आकड़ों से सैंकडो गुना अधिक है। भाषा विषयक गलत आंकड़े जनगणना के अवसर पर इसलिए एकत्र हो जाते हैं कि भाषा एव बोलियो का महत्त्वपूर्ण काम ऐसे व्यक्तियो के द्वारा संपन्न होता है जो भाषा एव बोलियो के स्वरूप का विश्लेषण नही कर सकते। इसका दूसरा कारण यह है कि जनगणना के अवसर पर बीकानेरी बोलने वालों ने अपनी बोली मारवाडी ही बताई है अत वर्तमान बीकानेरी भाषियो की जनसंख्या क्षेत्र व सीमा के आधार पर ७, १५, ००० मानी जा सकती है।[1]

१ ७ राजस्थानी की विभिन्न बोलिया एव मारवाडी

राजस्थानी की विभिन्न बोलियों में बीकानेरी का स्थान कहा है? इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए यदि हम अधिकारी विद्वानो द्वारा किया गया राजस्थानी बोलियों का वर्गीकरण प्रस्तुत करें तो अप्रासंगिक न होगा। डा० ग्रियर्सन ने एल० एस० आई० भाग ९ में राजस्थानी का वर्गीकरण इस प्रकार किया है–

१– पश्चिमी राजस्थानी– इसमें ये बोलिया आती हैं– जोधपुर की स्टैंडर्ड या 'खड़ी राजस्थानी' अर्थात् शुद्ध पश्चिमी मारवाडी, ठटकी, तथा थली, और बीकानेरी बागडी शेखावटी, मेवाडी, खराडी, सिरोही की बोलियाँ ("आबू रोड" की बोली या राठी तथा साएठ की बोली इनमें हैं) गोडवाडी और देवडावाटी।

२– उत्तर पूर्वी राजस्थानी अहीरवाटी और मेवाती।

३– मध्य-पूर्वी राजस्थानी (ढूढाडी) - तोरावाटी, "खडी जयपुरी" काठैडा राजावाटी, अजमेरी, किशनगढी चौरासी (शाहपुरा), नागर चाल हाडौती (सिपाडी के साथ)।

१– सेंसस आफ इण्डिया सन् १९६१ क्षेत्र व सीमा में दिए गये ग्रामो व तहसीलों में बीकानेरी भाषियों की जन संख्या, के आधार पर।

४- दक्षिण-पूर्वी राजस्थानी या मालवी इसके कई रूप भेद हैं, जिनमें रागड़ी और सोंडवाडी हैं।

५- दक्षिणी राजस्थानी इनमें निमाडी आती है।

परन्तु श्री सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या उक्त वर्गीकरण को मान्यता नहीं देते।[1] उनके अनुसार ग्रियसन की १ तथा ३ वर्ग की बोलियों को ही राजस्थानी नाम देना उचित है। एक को पश्चिमी राजस्थानी एवं तीन को पूर्वी राजस्थानी कहना वे उचित मानते हैं। वे अहीरवाटी, मेवाडी, निमाडी को पहाडी हिन्दी से सम्बन्धित मानते हैं और अपनी इस मान्यता की सदिग्धावस्था के साथ चरम निश्चय की अपेक्षा रखते हैं। परन्तु चाटुर्ज्या के इस निश्चय से बीकानेरी की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आता और ग्रियसन के अनुसार उसे पश्चिमी राजस्थानी के अन्तर्गत रखा जा सकता है। पश्चिमी राजस्थानी की प्रधान बोली मारवाडी है।

१ ७ १ मारवाडी की विभिन्न शाखाए एवं बीकानेरी तथा उनमें अन्तर

जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है कि मारवाडी पश्चिमी राजस्थानी की प्रमुख बोली है। प्रमुख रूप से मारवाड की भाषा होने के कारण इसका नाम मारवाडी है। यह नाम नया नहीं है। अबुल फजल के 'आइने अकबरी' तथा कुछ अन्य प्राचीन पुस्तकों में भी यह आया है।[2] मारवाडी का क्षेत्र मारवाड, मेवाड पूर्वी सिंध जैसलमेर, बीकानेर, दक्षिणी पंजाब तथा जयपुर का पश्चिमी-उत्तरी भाग है। मारवाडी अपने भौगोलिक विस्तार की दृष्टि से राजस्थानी की अन्य सभी बोलियों के योग से बडी है।[3] बीकानेरी इसी मारवाडी की एक प्रमुख बोली है। डा० भोलानाथ तिवारी ने मारवाडी का वर्गीकरण इस प्रकार किया है।

परिनिष्ठित मारवाडी-यह मारवाड में बोली जाती है। इसके अतिरिक्त

१- श्री सुनीति कुमार चटर्जी राजस्थानी भाषा, पृष्ठ ६ १०

२- डॉ० भोलानाथ तिवारी भाषा विज्ञान कोष, पृष्ठ ५१५

३- वही पृष्ठ ५१५

पूर्वी दक्षिणी, पश्चिमी तथा उत्तरी म चार रूप है जिनके अन्तर्गत प्रमिख उप-बोलिया इस प्रकार है—

पूर्वी मारवाडी-मगरा की बोली, मेरवाडी मारवाडी गिरासिया की बोली, मारवाडी ढूढाडी गोडावाटी, मेवाडी। मेरवाडी-मारवाडी।

दक्षिणी मारवाडी–गोडवाडा सिरोही, देवडावाटी, मारवाडी गुजराती

पश्चिमी मारवाडी,थली ठटकी

उत्तरी मारवाडी बीकानेरी शेखावाटी बागडी।

डा० भानानाथ तिवाडी के उक्त वर्गीकरण से स्पष्ट हो जाता है कि बीकानेरी उत्तरी मारवाडी की एक प्रमुख उप शाखा है।

१ ७ २ मारवाडी एव बीकानेरी मे अन्तर–

वतमान बीकानेरी एव आदश मारवाडी म निम्नलिखित अतर मिलता है–

१– मारवाडी म अस्तिवाचक क्रिया के सामान्य वतमान कालिक रूप एव भूतकालिक रूप छा हो हैं पर बीकानेरी मे छो का सवथा अभाव है।

२– मारवाडी म सयोजक समुच्चय बोधक अव्यय ' और ' के लिए ' नै " का प्रयोग होता है पर बीकानेरी म इसका पूर्ण रूपेण अभाव है।

३– मारवाडी की अधिकांश अल्प प्राण ध्वनिया बीकानेरी म महाप्राण हो गई है–

मारवाडी	बीकानेरी
कन	खन
काकडी	खाखडी
ऊट	ऊठ
माटो	माठो

४– बीकानेरी म व्यजनान्त ध्वनियो का बाहुल्य हो गया है, पर मारवाडी

न रहना अत्यल्पता है।

५– बीकानेरी में " ण " ध्वनि का प्रयोग आदर्श मारवाड़ी की अपेक्षा बहुत कम हो गया है।

मारवाड़ी	बीकानेरी
इणन	इनें
उणन	वेनें
इण	इयें
जिण	जिके

६– निश्चयार्थ भाव को प्रकट करने के लिये बीकानेरी मे भविष्यार्थ क्रिया के साथ /ईज्/ का प्रयोग होता है जबकि आदर्श मारवाड़ी मे केवल क्रिया के साथ / सी / प्रयुक्त होता है–

मारवाड़ी	बीकानेरी
खासी	खाईसीज
जासी	जाईसीज
लासी	लाईसीज

१ ८ आदर्श बीकानेरी

डॉ० भोलानाथ तिवाड़ी के अनुसार बीकानेरी एक उपबोली है। इस बोली के यहाँ अनेक रूप देखने को मिलते है। बीकानेर नगर म मुख्य रूप से चार वर्ण निवास करते हैं– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एव शूद्र (विभिन्न निम्न कोटि की जातियाँ)। इन चारो वर्णो की बोली म भेद पाया जाता है। यह भेद अत्यन्त सूक्ष्म है और विभिन्न वर्गों की उन स्थानीय भाषाओ की विशेषताओ पर आधृत है जहा से व आकर यहाँ बस है। चार पाच सौ वर्ष साथ रहने से यह अन्तर अत्यन्त सूक्ष्म रह गया है। प्रश्न है, यहा की बीकानेरी आदर्श मानी जाय ? इस सन्दर्भ मे लेखक न पद्धति यह अपनाई है कि जो क्षेत्र मध्यवर्ती है एव अन्य भाषा क्षेत्रो तथा भाषा भाषियो के प्रभाव म अलग हैं उन्ही क्षेत्रो की वाणी को आदर्श बीकानेरी माना गया है। इस

दृष्टि से वर्तमान [illegible]

बीकानेरी का क्षेत्र माना जा सकता है। इस क्षेत्र म भी बीकानेरी का आदर्श स्वरूप ग्रामा म ही मिलता है क्योंकि इस क्षेत्र के निवासी अन्य भाषा भाषियों स कम प्रभावित है।

१ ६ बीकानेरी की भाषा वैज्ञानिक विशेषताए

बीकानेरी की प्रमुख ध्वन्यात्मक एव रूपात्मक विशेषताए निम्नलिखित हैं–

१ ६ १ ध्वन्यात्मक विशेषताए

बीकानेरी की ध्वन्यात्मक विशेषताए निम्नलिखित हैं।

१– अन्त्य ध्वनि की दृष्टि से बीकानेरी ओँकार बहुला है–

बीकानेरी	हिन्दी
घोडो ँ	घोडा
मीठो ँ	मीठा
दादो ँ	दादा
गयो ँ	गया
छोटो ँ	छोटा

२– बीकानेरी म नासिक्य ध्वनियो स पूव आने वाली "आ" ध्वनि 'आँ' म परिवर्तित हो जाती है–

बीकानेरी	हिन्दी
राँम	राम
काँम्	काम
काँन	कान
हाँण	हानि
आँम्बो ँ	आम

३– बीकानेरी मे शब्दा के आदि स्वर, विशेपकर अ के दीर्घीकरण की प्रवृत्ति पायी जाती है–

बीकानेरी	हिन्दी
पाडोसी	पडोसी
खाकडी	ककडी
बोन्दरो	बन्दर
ओंधो	अधा

४– बीकानेरी म हिदी के सयुक्त स्वर "ए" एव "औ" क्रमश "अ" एवं "ओं" म परिवर्तित हो जाते हैं—

बीकानेरी	हिन्दी
अस्सो	ऐसा
कस्सों	कसा
वस्सों	वैसा
जस्सा	जैसा
दाँड	दौड
फॉरन्	फौरन
ओंरत्	औरत

५– बीकानेरी म आरम्भ का "य" प्राय "ज" मे परिवर्तित हो जाता है—

बीकानेरी	हिन्दी
जुग्	युग
जम	यम
जोग	योग

६– बीकानेरी म अन्त्य "य" का सयुक्त व्यजन होने पर लोप हो जाता है—

बीकानेरी	हिन्दी
पुन्	पुण्य
भाग्	भाग्य

८— बीकानेरी में 'क्ष' ध्वनि का प्रयोग नहीं होता। 'क्ष' के स्थान पर 'छ' अथवा 'ख' का प्रयोग होता है—

बीकानेरी	हिन्दी
लछमी	लक्ष्मी क्ष>छ
राखस	राक्षस क्ष>ख
रख्या	रक्षा क्ष>ख

९— स 'श', 'ष', ऊष्म व्यंजनों में केवल दन्त्य 'स्' ध्वनि ही उपलब्ध होती है।

बीकानेरी	हिन्दी
सल्ला	शिला
सुसरो	श्वसुर
भासा	भाषा

१०— बीकानेरी की अपनी कतिपय विशेष ध्वनियाँ हैं, जो ध्वनि ग्राम रूप में प्रतिष्ठित हैं —

१— न्ह्	न्हावणों (नहाना)
२— म्ह्	म्ह, (हम) म्हारमा
३— ल	बाल (जलाना)
	गाल (गाली)

११— बीकानेरी में 'ल' का उच्चारण दो प्रकार से होता है। 'ल' हिन्दी के समान ही है पर ल् उच्चारण के आधार पर बोली में कहीं उत्क्षिप्त कहीं मूर्द्धन्य एवं कहीं पार्श्विक ध्वनियों की तरह व्यवहृत होता है —

ल	ल
काल (कल)	काल (अकाल)
गाल (कपोल)	गाल (गाली)
बालों (प्यारा)	बालों (जलाना)
बोलो	बोली (बहरी)
बोना (कहा)	बोलो (बहरा)

१२— बीकानेरी की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि शब्द की उदात्त एवं अनुदात्त ध्वनियों में अन्तर आते ही अर्थ में अन्तर आ जाता है—

अनुदात्त		उदात्त	
काड	(चाव)	का ड	(कुष्ट रोग)
कद	(लम्बाई)	क' द	(कब)
मॅल	(गन्दगी)	मॅ' ल	(महल)
नाथ	(स्वामी) (जाति विशेष)	ना'थ	(आभूषण)

१३— बीकानेरी में ऋ और रेफ क्रमश र ह, और रकार में परिवर्तित हो जाते हैं —

बीकानेरी	हिन्दी
रति	ऋति
रतु	ऋतु
करम्	कर्म
धरम्	धर्म

बीकानेरी	हिन्दी
म्हैं रोटी खाई।	मैंने रोटी खाई।
छोरों दूध पियो।	लड़का ने दूध पिया।
म्हैं कताब पढ़ाई।	मैंने पुस्तक पढ़ाई।

कर्म कारक की अभिव्यक्ति के लिए 'नैं' परसर्ग का प्रयोग होता है —

बीकानेरी	हिन्दी
रॉमू नैं पढ़ाय दे।	राम को पढ़ा दो।
कुत्तों नैं काढ।	कुत्ते को निकालो।

सम्प्रदान कारक की अभिव्यक्ति के लिए 'रैं', नैं' परसर्ग का प्रयोग होता है —

बीकानेरी	हिन्दी
घोड़ाँ रैं घास लायों हूँ।	घोड़ा के लिए घास लाया हूँ।
छोरों नैं आसीस।	लड़का के लिए आशीर्वाद।

करण एवं अपादान कारक में 'सूं' परसर्ग का प्रयोग होता है —

बीकानेरी	हिन्दी
पड़त जी सूं बात्यॉं होई।	पंडित जी से बातें हुई।
डागलै सूं पड़ग्यों।	छत पर से गिर गया।

सम्बन्ध कारक की अभिव्यक्ति के लिए रॉ, रा, री परसर्गों का प्रयोग होता है —

बीकानेरी	हिन्दी
रॉम रॉ घोड़ों।	राम का घोड़ा।
रॉमू री घोड़ी।	राम की घोड़ी।
रॉमू रा घोड़ा।	राम के घोड़े।

अधिकरण कारक की अभिव्यक्ति के लिए 'मैं' परसर्ग का व्यवहार

होता है —

बीकानेरी	हिंदी
घर में कोय नी ।	घर मे नहीं है।
से'र में जाव ।	शहर मे जाओ।

३– बीकानेरी म निकटवर्ती एव दूरवर्ती दोनो प्रकार के निश्चय वाचक सवनामों के एक वचनीय रूप लिंग स प्रभावित हाते हैं —

दूरवर्ती पुलिंग	निकटवर्ती पुलिंग
वों	आ
दूरवर्ती स्त्री लिंग	निकटवर्ती स्त्रीलिंग
वा	आ

४ बीकानेरी मे उत्तम एव मध्यम पुरुष सवनाम के एकवचन एव बहुवचन के रूप निम्नलिखित हैं —

	एक वचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हू म्हैं	म्हे म्हां
मध्यम पुरुष	तू थूं	थे थां

इसके अतिरिक्त बीकानेरी म एक विशेष सवनाम 'आपां' भी उपलब्ध होता है। यह श्रोतृ सापेक्ष सवनाम शब्द है जिसमे श्रोता और वक्ता दोनो समाहित हो जाते हैं। यथा —

बीकानेरी	हिन्दी
'आपां दस बजी जीमां ला'	हम दस बजे खाना खायगे

इसका अथ होगा हम अपन मित्र के साथ (श्रोता सहित) दस बजे खाना खायेंगे।

५– बीकानेरी म पूर्णा क गणना सूचक ओकारान्त विशेषणा (दो, सौ आदि) के अतिरिक्त समस्त ओकारात विशेषणा म अपने विशेष्य के लिंग वचन एवं कारक के अनुरूप परिवतन होता है। अन्य विशेषणा (आकारात, ईकारान्त

ऊकारान्त एव व्यजनान्त) म अपने विशेष्य के लिंग-वचन एव कारक के अनुरूप परिवतन नहीं होता ।

६– बीकानेरी म वतमान काल म तिङ तीय क्रिया पद प्रयुक्त होते हैं यथा–

बीकानेरी	हिन्दी
छोरो करै है ।	लडका करता है ।
छोरी आवै है ।	लडकी आती है ।
छोरा खावै है ।	लडके खाते हैं ।

७– बीकानेरी मे वतमान निश्चयाथ, वतमान कृदन्त की सहायता से बनाये जाने के स्थान पर सामान्य वतमान के साथ सहायक क्रिया द्वारा बनाया जाता है –

बीकानेरी	हिन्दी
हू मारू हू ।	मैं मारता हूँ ।
हू जाऊ हू ।	मैं जाता हूँ ।

८– वतमान कालिक सहायक क्रिया √ह धातु बीकानेरी मे अन्य स्वतन्त्र क्रिया रूपो के समान ही तिङ प्रत्यय ग्रहण करती है यथा–

	एकवचन	बहुवचन
(अन्य पुरुष)	है	है
(मध्यम पुरुष)	है	हो
(उत्तम पुरुष)	हू	हां

९– बीकानेरी म भूतकालिक सहायक क्रिया रूप धातु में कृत प्रत्यय के योग से बनते हैं । साथ ही हिन्दी की भांति सहायक क्रिया, धातु ही मानी जा सकती है । किन्तु ओकारान्त बोली होने के कारण बीकानेरी में जहा आकारान्तता बहुवचन का बोध कराती है वहा हिन्दी म एक वचन का, यथा–

छोरो हो	(लडका था)
छोरा हा	(लडका था)

छोरी ही	(लड़की थी)
छोरो थो	(लड़का था)
छोरा था	(लड़के थे)
छोरी थी	(लड़की थी)

१०– हिंदी की √ कर् धातु के भूत कालिक कृदन्त रूप किया, किये, की, के स्थान पर पर बीकानेरी में क्रमश कियो, करियो, करिया, करी रूप उपलब्ध होते हैं।

११– बीकानेरी में भूत काल के निर्माण के लिए प्राय धातु में -यों प्रत्यय (स्वरान्त धातु एक वचन में य + आँ) एव बहुवचन में -या (स्वरान्त धातु बहुवचन में य+आ) प्रत्यय जोड़े जाते है। इयों प्रत्यय व्यंजनान्त एकवचन में एव -इया प्रत्यय व्यंजनान्त बहुवचन में जोड़ा जाता है। यथा–

स्वरान्त धातु

	एक वचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	बँ खायाँ	बाँ खाया
मध्यम पुरुष	तू आयाँ	थ आया
उत्तम पुरुष	म्हे खाया	म्हाँ खाया

व्यंजनान्त धातु

	एक वचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	बँ मारिया	बाँ मारिया
मध्यम पुरुष	तू पढ़ियाँ	थ पढ़िया
उत्तम पुरुष	म्हे काढ़ियाँ	म्हाँ काढ़िया

१२– बीकानेरी में भूतकालिक कृदन्त की रचना के लिए –ड़ स्वार्थक प्रत्यय का बहुतायत में प्रयोग होता है यथा—

एकवचन	बहुवचन
गायोड़ो बैल	गायोड़ा बैल
मनियोड़ो पाठ	तनियोड़ा पाठ

[सूचना –

। \ स्वाथक प्रत्यय –आड भी माना गया है क्योंकि –ओ, पर लिंग-वचन–कारक का प्रभाव नहीं पड़ता ।]

१३– बीकानरी म भविष्यत् काल का निर्माण दो प्रकार से होता है –

(अ) सामान्य वर्तमान म 'लाँ' या 'ला' के योग स –

	एकवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	मारें लाँ, ला	मारें ला
मध्यम पुरुष	मारें ला	मारो ला
उत्तम पुरुष	मारु लो, ला	मरा ला

	(आ) एक वचन	बहु वचन
अन्य पुरुष	मारसी	मारसी
मध्यम पुरुष	मारीस	मारसाँ
उत्तम पुरुष	मारीस	मारसाँ

निश्चयार्थ भाव का बोध कराने के लिए बीकानरी मे 'ईज' प्रत्यय का प्रयोग क्रिया रूप के भविष्यत् काल म होता है –

बाँ आसीज, हू जाइसीज् आदि

–१४ बीकानेरी म पूर्व कालिक क्रिया के निर्माण के लिए –र' क्रिया के अंत म लगाया जाता है। स्वरान्त धातु स पूर्व –य् श्रुति का आगम होता है–

स्वरात	व्यंजनात
खायर्=खाकर	पढर=पढ़कर
आयर=आकर	जीमर्=भोजन करके
जायर=जाकर	रमर =खेलकर

अध्याय / १

संज्ञा—पद

संज्ञा उस विकारी शब्द को कहते हैं जिसमे प्रकृत किंवा कल्पित सृष्टि की किसी वस्तु का नाम सूचित हो[1] यथा राम, कृष्ण, गोपाल, भगवान, आदि। उक्त परिभाषा म वस्तु शब्द अत्यन्त व्यापक अर्थ में प्रयुक्त हुआ है वह केवल प्राणी व पदार्थ का ही बोधक नहीं, अपितु उनके धर्मों का भी बोध कराता है।

बीकानेरी' में संज्ञा-पद, प्रातिपदिक अंश (अभिप्राय बोधक) तथा लिंग-वचन कारक सम्बन्धदर्शी विभक्ति प्रत्यया (व्याकरणिक अर्थ बोधक) के योग स निर्मित होता है। सर्व प्रथम एक संज्ञा प्रातिपदिक अंशों के निर्माण की आवश्यकता है जो व्याकरणिक अर्थ के व्यक्त विभक्ति प्रत्यया (लिंग वचन-कारक सम्बन्ध-दर्शी) को ग्रहण करके 'पद' की कोटि में पहुंचते हैं। इस प्रकार संज्ञा-पद रचना में दो तत्वों प्रातिपदिक अंश (अभिप्राय) तथा विभक्ति प्रत्यय (व्याकरणिक अर्थ) के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। अतः संज्ञा पद रचना सम्बन्धी अपने अध्ययन की दिशा को हम निम्न चार वर्गों के अंतर्गत विभाजित कर सकते हैं —

१— प्रातिपदिक अंश

१— कामता प्रसाद गुरु हिन्दी व्याकरण पृ० ६३

२– लिंग
३– वचन
४– कारक

कोंकणी 'सना-पदों' को स्वतंत्र रूपांश संयोग की दृष्टि से दो वर्गों विभाजित किया जा सकता है।

(अ) एक स्वतंत्र रूपांश युक्त नामवाची-पद (संज्ञा पद)

(आ) दो या दो से अधिक स्वतंत्र रूपांश युक्त नामवाची पद (समस्त संज्ञा-पद)

२ १ एक स्वतन्त्र रूपाँश युक्त नामवाची-पद (संज्ञा-पद)

जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है कि संज्ञा-पद की रचना प्राति पदिक अंश में लिंग-वचन-कारक सम्बन्ध-दर्शी विभक्ति प्रत्ययों (व्याकरणिक अर्थ वाचक) को जोड़ कर की जाती है। इसीलिए जब संज्ञा-पदों पर विचार किया जाता है तो सर्व प्रथम प्रातिपदिक अंशों का निर्धारण किया जाता है, जो व्याकरणिक अर्थ के व्यक्त विभक्ति प्रत्ययों (लिंग वचन कारक सम्बन्धदर्शी) को ग्रहण कर 'पद' की कोटि में पहुँचते हैं एवं तदनन्तर लिंग-वचन कारक पर विचार किया जाता है। अतः क्रमशः प्रातिपदिक, लिंग, वचन, कारक, का विवेचन नीचे किया गया है।

२ १ १ प्रातिपदिक

अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् [1]

अर्थात् धातु भिन्न (अधातु) और प्रत्यय भिन्न (अप्रत्यय) अर्थवान प्रातिपदिक संज्ञक होता है। दूसरे शब्दों में प्रातिपदिक संज्ञा के लिए निम्न लिखित बातें आवश्यक हैं –

१– सार्थक शब्द ही प्रातिपदिक हो सकता है, निरर्थक शब्दों की प्रातिपदिक संज्ञा नहीं होती।

१– पाणिनि सिद्धान्त कौमुदी /१/२/४५/

लि व का रहित नाँन्		नाँन्
सज्ञा-पद	माँमाँ	माँमा
लि व का रहित माँम्		माँम्

(ग) स्त्री लिंग

सज्ञा पद	नाँनी	नाँयाँ
लि व का रहित	ना न्	नोँन्
सना पद	माँमी	मोम्यो
लि व का रहित	मोँम्	माँम्

उपयु क्त सना पदा (नाँनाँ मामाँ, नाँनी मोँमी) म म यदि पु एक व वा आँ पु व व बोधक आ स्त्री लि ए व बोधक ई एव स्त्रीलिंग बहुवचन (व व) बाधक आँ, लि व का विभक्ति प्रत्यया को निकाल दिया जाय ता नोँन् माँम् प्रातिपदिक अ ग के रूप म अवशिष्ट रहते है जिनका ग्राली म काई अथ नहा है ।

(३) प्राचीन भारतीय आय भाषा काल म कारक बाधक विभक्तिया का प्रयोग सश्लिष्ट कोटि का था परन्तु आधुनिक भारतीय आय भाषाओ व बोलिया की भाति बीकानेरी म भी परसर्गो का प्रयोग विश्लिष्ट कोटि का है अत परम्परा नुगत प्रातिपदिक अ गो का निर्धारण नही किया जा सकता ।

४– इस आधार पर प्राप्त प्रातिपदिक अ गा के कारण बोली म श्लेषार्थी अ गा का बाहुल्य हो जायगा जिसम अथ बोध म अस्पष्टता आ जायगा, यथा—

बीकानेरी	हिन्दी पर्याय
१– घाड +ओँ (घाडा)	घोडा
घाड	तत्वगी कन्या के लिय प्रयुक्त शब्द
२– तार +आँ (ताराँ)	तारा

१ १ २ ३ अन्त्य ध्वनि के आधार पर लिंग परि

(अ) बीकानेरी में समस्त आँकारान्त संज्ञाएं पुल्लिंग है यथा-

बीकानेरी	हिन्दी
१- दादाँ	दादा
२- बाँदराँ	बन्दर
३- घोडाँ	घोडा
४- छोराँ	लडका
५- लावडाँ	पुत्र
६- आटाँ	आटा

(आ) -ई में अन्त होने वाली संज्ञाए अधिकांशत स्त्रीलिंग होती है यथा

बीकानरी	हिन्दी
१- काकी	चाची
२- लुगाई	स्त्री
३- साखडी	बकरी
४- छोरी	लडकी
५- रोटी	रोटी
६- दवाई	दवा

परन्तु इसके कुछ अपवाद भी उपलब्ध होते हैं यथा- नाई घोबी मोती माली लाई (रूप) मोती दई, (दही) दरजी आदि ।

(इ) -आ में अन्त होने वाली अधिकांश संज्ञाए स्त्रीलिंग है यथा-

बीकानरी	हिन्दी
१- छया	छाया
२- भूवा	बुआ
३- मा	माता
	दया